WWJMRD 2018; 4(2): 425-427
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
E-ISSN: 2454-6615

**महेन्द्र कुमार**
पीएच.डी. छात्र
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत

**Correspondence:**
**महेन्द्र कुमार**
पीएच.डी. छात्र
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत

# शेखावाटी किसान आंदोलन के उत्प्रेरक तत्व

## महेन्द्र कुमार

**सार संक्षेप**
किसी आन्दोलन या क्रान्ति की ऊर्जा एवम् आवश्यक अवयव तो स्थानीय मिट्टी व माहौल में मौजूद रहते हैं परन्तु कभी–कभी ये अवयव लम्बे समय तक सुषुप्त अवस्था में पड़े रहते हैं। जब इन्हें आवश्यक प्रेरणा व पथ–प्रदर्शन मिलता है तो पहले से ही खुदबुदा रहा माहौल उत्प्रेरकों के कारण एक निश्चित दिशा पा जाता है और किसी बडे आन्दोलन या क्रान्ति को जन्म देता है।
फ्रांस की क्रान्ति से लेकर आजतक के सभी बड़े आन्दोलन व क्रांतियाँ ऐसी ही समान परिस्थितियों की ओर इशारा करती हैं, जैसे––स्थानीय अवयव, उत्प्रेरक तत्व और एक तीव्रतम क्रिया, प्रतिक्रिया और एक नई चीज, नई धारा का जन्म। ऐसा ही कुछ शेखावाटी के आन्दोलन में घटित हुआ। दीर्घकाल से सुषुप्त पड़ी हुई वहाँ की स्वाभाविक किसान शक्ति, जो एक व्यवस्था के अन्तर्गत आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक बदहाली वशोषण की शिकार हो रही थी, उसमें भी कुछ प्रेरक शक्तियों का समावेश हुआ। ये उत्प्रेरक तत्व मूलतः बाहरी थे जिनका संसर्ग स्थानीय शक्तियों से हुआ और एक महान् आन्दोलन का मार्ग प्रशस्त हुआ। एक विचारधारा, एक जागृति, एक कौमी एकता और अन्ततः एक बदलाव जिसने एक बड़े भू–भाग की आबादी का जीवन परिवर्तन करने में अहम् भूमिका निभाई और एक नयी व्यवस्था को जन्म दिया। द्य

**आन्दोलन के उत्प्रेरक तत्व**
शेखावाटी किसाना आन्दोलन को प्रेरणा प्रदान करने वाले उत्प्रेरक तत्वों का विवेचन किया गया है जिनका क्रम इस प्रकार है:–[1]

**शेखावाटी के सैनिक** – शेखावाटी की देहाती प्रजा का बाहरी दुनियां से पहला संसर्ग, यहाँ के किसान पुत्रों का ब्रिटिश सेना में भर्ती होने के कारण हुआ। सन् 1920 में प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर, जब वे सैनिक वापस अपने वतन को लौटे तो वे अपने साथ एक नई दुनिया, नया दृष्टिकोण और एक आत्मविश्वास लेकर लौटे। उनके दिलों में स्वाभिमान, निर्भीकता व आत्मसम्मान की धारा बह रही थी। शिक्षा के प्रति उनका सम्मान बढ़ना स्वाभाविक था। अतः उन्होंने अपने बच्चों को कस्बों में चल रही पाठशालाओं में प्रवेश दिलाया। ब्रिटिश सेना के पेंशनधारी सैनिक होने से इनकी समाज में भी साख बन रही थी। ग्रामीण समाज की जातीय व्यवस्था इनकी वर्दी व िबहादुरी से प्राप्त अनेक तमगों के आड़े नहीं आ रही थी। छोटे–मोटे जागीरदार इन सैनिकों से घबराने लगे। आगे चलकर इन सैनिकों व फौजी अफसरों ने शिक्षा, समाज सेवा व जातीय संगठनों में बढ़ चढ़ कर भाग लिया, जिसके कारण शोषण से दबे कुचले किसानों में एक नवस्फूर्ति और चेतना का संचार हुआ। इनका मुख्य योगदान सांस्कृतिक व सामाजिक क्षेत्र में रहा, जहाँ इनके बेहतर रहन–सहन, बेहतर आर्थिक स्थिति, शिक्षा के प्रति सम्मान व सामाजिक हैसियत का अन्य किसानों पर भी असर पड़ा ।

**आर्य समाज** – बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में आर्य समाज ने एक सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया। वस्तुतः आर्य समाज पाखण्डवाद, ब्राह्मणवाद, अज्ञानता, ऊँच–नीच और अशिक्षा के खिलाफ एक सामाजिक व सांस्कृतिक आन्दोलन था। यह सदियों से अनवरत चली आ रही रूढ़ियों, अंधविश्वास व जड़ता को मिटाकर, समाज के शोषित वर्ग को ज्ञान, चेतना, आत्मसम्मान व सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाने वाली एक विचारधारा थी। दयानन्द सरस्वती व उनके आर्य समाज को कर्मस्थली उत्तर–पश्चिम भारत के किसानों ने प्रदान की थी।[2]

**जाट महासभा** – जातीय सभायें आर्य समाज की ही देन थी। इनका प्रादुर्भाव बीसवीं सदी के शुरूआत में ही हुआ। आर्य समाज ने अधिसंख्य समाज का, मुट्ठीभर लोगों द्वारा किये जा रहे शोषण

की व्यथा को पहचाना। कालान्तर में अपनी अस्मिता व हैसियत गंव बैठी, अतीत की गौरवशाली जातियाँ भी निम्नवर्ग में शामिल होने को मजबूर हो गई, ऐसा शोषक वर्ग के षडयंत्र के कारण ही सम्भव हुआ। एक लम्बी सामाजिक प्रक्रिया के बाद धीरे–धीरे वे जातियाँ, जो शासकीय अधिकार खो बैठीं थीं, उन्हें भी सामाजिक व सांस्कृतिकरण की प्रक्रिया में नीचे धकेल दिया गया ताकि वे अस्तित्वहीन रहें और शोषण का क्रम चलता रहे। इनमें जाट, गुर्जर, अहीर, मीणा आदि प्रमुख थे। ''अखिल भारतीय जाट महासभा'' इसी का परिणाम थी जो अत्यन्त ही शक्तिशाली संगठन था। इस प्रकार एक शीर्षस्थ संस्था के रूप में 'जाट महासभा' का शेखावाटी के किसान आन्दोलन में बहुत बड़ा योगदान रहा।[3] पुष्कर महोत्सव की श्रृंखला में ही दिल्ली में मार्च 1931 में जाट महासभा का जलसा धौलपुर के महाराज उदयभान सिंह के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें शेखावाटी के जाट किसानों ने भाग लिया। यहीं पर '**राजस्थान जाट महासभा**' की नीवं रखी गई।

**बाह्य नेता के रूप में उत्प्रेरक तत्व** :–

1. **ठाकुर देशराज सिंह जधीना** – इस आन्दोलन को समग्र बनाने वाले नेताओं की श्रृंखला में पहला नाम ठाकुर देशराज सिंह जधीना का लिया जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। ठाकुर देशराज भरतपुर रियासत के जधीना गाँव में एक साधारण जाट किसान के घर में पैदा हुए। ठा. देशराज तेजस्वी, ओजस्वी व उत्साही व्यक्तित्व के धनी थे, जिसका सानी विजयसिंह पथिक व मोतीलाल तेजावत ही हो सकते हैं, जिन्होंने क्रमशः बिजौलिया व मेवाड़ के भील किसान आन्दोलनों का नेतृत्व किया था। ठा. देशराज ने राजपुताना के किसानों की हालत देखकर यहाँ संगठन बनाने का मानस बनाया और अपनी लेखनी, अखबारों, भाषणों, वक्तव्यों व क्रियाशीलता से जयपुर, जोधपुर, बीकानेर व अजमेर मेरवाड़ा के किसानों में जान फेंक दी। ठाकुर देशराज ने किसानों को अपने हकों के लिये लड़ने को खड़ा कर दिया लेकिन उन्होंने सफल नेतृत्व तो शेखावाटी में ही दिया और वहाँ लड़े गये महाभारत के वे सारथी बन गए। पहले अपने अखबार ''जाटवीर" द्वारा आगरा से उन्होंने किसानों को संगठित व जागृत किया, फिर "राजस्थान संदेश' नामक अखबार के सम्पादक बनकर वे अजमेर आये और यहीं से राजपूताने की रियासतों, विशेषकर शेखावटी में वे हर सप्ताह ट्रेन से जाते और गुप्त मीटिंग, सभा करते। संगठन खड़ा होने के बाद उन्होंने निर्भिकता से जागृति का कार्य शुरु किया।[4]
2. **कुंवर रतनसिंह** – कुंवर रतनसिंह भी भरतपुर रियासत से सम्बन्धित थे। जिन्होंने आरम्भिक जागृति के साथ–साथ शेखावाटी के किसान आन्दोलन को सफल नेतृत्व प्रदान किया। इनकी कर्म स्थली सीकर रियासत का क्षेत्र रहा और सीकर के किसानों का संगठन इनके दिशा निर्देशन में ही खड़ा हुआ। ये पुष्कर महोत्सव में ''अखिल भारतीय जाट विद्याथी कॉन्फ्रेंस'' के स्वागताध्यक्ष व राजस्थान क्षत्रिय जाट महासभा के प्रेसीडेन्ट रहे।[5]
3. **मास्टर रतनसिंह बी.ए.** – मास्टर रतनसिंह रोहतक जिले के रहने वाले थे और पिलानी के बिड़ला कॉलेज में प्राध्यापक थे। उन्होंने 1925 में ''जाट सभा'' की नींव झुंझुनूं के बगड कस्बे में डाली और ठिकानेदारों के शोषण के खिलाफ किसानों का संगठन खड़ा करने में भारी योगदान दिया। इन्होंने किसानों के शोषण पर प्रकाश डालते हुए उसी दौरान एक पुस्तक भी प्रकाशित की थी।
4. **विजयसिंह पथिक** – जाने माने किसान नेता विजयसिंह पथिक का हालांकि सीधा सम्बन्ध शेखावाटी के किसान आन्दोलन से नहीं रहा किन्तु उन्होंने ''राजस्थान सेवा संघ, अजमेर'' की स्थापना की और उसके अध्यक्ष रहे। इस संस्था ने बाहरी दुनियाँ से सम्पर्क रखते हुए किसानों की मदद की। विजयसिंह पथिक ने किसान आन्दोलन को व्यवस्थित रूप देने हेतु सीकर का दौरा किया और किसानों को मार्गदर्शन दिया। देश के प्रमुख अखबारों में सीकर व पंचपाना शेखावाटी के समाचार भेजकर समस्त राजनैतिक व सामाजिक संगठनों व सम्बन्धित सरकारों को अवगत कराया। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से माहौल बनाकर किसानों में जागृति का काम किया।[6]
5. **सर छोटूराम** – सर छोटूराम उच्च शिक्षा प्राप्त, अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी व किसानों के पक्के हिमायती थे। सन् 1919 के गवर्मेन्ट ऑफ इण्या एक्ट के तहत् जब उत्तरदायी शासन की पहली सरकारें बनी तो सर छोटूराम 1921 के चुनावों के बाद संयुक्त पंजाब प्रान्त के वजीर नियुक्त किये गये। जहां उन्होंने बहुते से फैसले किसानों के हक में लिये। शेखावाटी के किसानों की सांस्कृतिक व राजनैतिक जागृति में उनका बड़ा योगदान है। पुष्कर महोत्सव, अखिल भारतीय जाट महासभा के दिल्ली अधिवेशन में उपस्थित रहकर उन्होंने शेखावाटी के किसानों को सम्बल प्रदान किया। दिल्ली महोत्सव के दौरान उन्होंने शेखावाटी के जाट किसानों से मंत्रणा की और झुंझुनू जाट महोत्सव का विचार प्रदान किया और इसे सफल बनाने में भरपूर सहयोग दिया।
6. **सेठ देवीबक्स सर्राफ** – सेठ देवीबक्स सर्राफ शेखावाटी में जनजागरण के अग्रदूत थे। इन्होंने मण्डावा में आर्य समाज की स्थापना की और आर्य समाज के मंच से राष्ट्रीयता, स्वदेशी, किसानों में जागृति और अन्याय का विरोध करने का प्रचार किया। शेखावाटी वैश्यों में प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने ठिकानाशाही के कोप के सामने सिर उठाया और कानूनी तरीकों से उन्हें पछाड़ देकर शेखावाटी में बढ़ी जकात को समाप्त कराने में सफल हुए। मण्डावा ठाकुर ने गांव में आतंक फैलाने के लिए सरे बाजार इनके जूते लगवाये थे, किन्तु आपने दुगुने जोश से जागीर अत्याचारों के विरूद्ध प्रचार किया और शेखावाटी के जाटों में एक जीवन पैदा किया।[7]
7. **रामसिंह कंवरपुरा** – चौधरी रामसिंह का जन्म शेखावाटी के गांव बख्तावरपुरा के एक बास कंवरपुरा में लगभग 1882 ई. में हुआ। शेखावाटी के जाटों में आप पहले व्यक्ति थे जिन्होंने किसानों की तकलीफों को दूर करने का बीड़ा भूदाराम सांगासी और मा० रतनसिंह के साथ उठाया था। अपने 1925 ई. में बगड़ में 'जाट सभा' कायम कर और उसके अध्यक्ष पद को स्वीकार कर शेखावाटी के 1925–26 के किसान आन्दोलन को नेतृत्व दिया था।

**समाचार पत्र के रूप में उत्प्रेरक तत्व** :– बीसवीं सदी के शुरु में राजपुताने में अजमेर को छोड़कर कहीं भी अखबारों का प्रकाशन नहीं होता था, ना ही अखबारों के पढ़ने व जनहित की खबरें छापने का माहौल था। अजमेर इसका अपवाद था, जहाँ ब्रिटिश हुकुमत का सीधा शासन था, फिर भी यहां प्रेस कुछ हद तक फलीभूत हुई।[8] कई अखबारों ने यहाँ कार्यालय खोले और प्रकाशन आरम्भ किया। राजपुताने की रियासती जनता को प्रभावित करने वाले अखबार आगरा और अजमेर दो ही स्थानों से निकलते थे लेकिन शेखावाटी का आन्दोलन ऐसी घटनाओं का सिलसिला था जिसकी खबरें देश के हिन्दी व अंग्रेजी के बड़े अखबारों में भी छपती थी। यह भी सही है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान हिन्दुस्तानी प्रेस व अखबार बहुत ही लोकप्रिय, जनहित के पोषक, शोषण और गुलामी के खिलाफ

लड़ी जा रही जंग के हित साधक थे। यही वजह थी कि शेखावाटी के किसान आन्दोलन को इन समाचार पत्रों से बहुत मदद मिली और उनके संघर्ष को आगे बढ़ाने में इनकी अहम भूमिका रही। आगरा से सर्वप्रथम ठा. देशराज द्वारा निकाले जाने वाले अखबार ''जाटवीर" ने संगठन बनाने, जातीय पंचायते स्थापित करने व किसानों की प्रारम्भिक चेतना व जागृति के काम में बहुत सहयोग दिया।

मण्डावा के 'आर्य समाज' जलसे में भाग लेने आये ठा. देशराज ने इस अखबार के जरिये शेखावाटी में किसानों के शोषण व दमन पर एक लेखमाला प्रकाशित की जिससे लोगों में नई जान का संचार हुआ। बाद में ''जाटवीर'' का प्रकाशन झुझुनूं से भी होने लगा।

आगरा से ही प्रकाशित ''गणेश'' ने भी किसान आन्दोलन में अहम भूमिका निभाई। इसके संस्थापक व सम्पादक भी ठाकुर देशराज ही थे। बाद में उन्होंने झुझुनूं से पं. ताड़केश्वर शर्मा को आगरा बुलाकर इसका सम्पादकीय कार्यभार सौंपा और इस दौरान अखबार ने जागीरी जुल्म का बड़ी निर्भीकता से भण्डाफोड किया, परिणामस्वरूप रियासती सरकारें घबरा उठी और ''गणेश'' का प्रवेश कोटा, बूंदी, जयपुर, बीकानेर, जोधपुर आदि रियासतों में निषेद्ध कर दिया गया। पत्रकारिता के माध्यम से जागृति लाने का बहुत बड़ा उदारहण पं. ताड़ेश्वर शर्मा का वह हस्तलिखित अखबार ''ग्राम समाचार'' था जो उन्होंने 1929 ई. में आरम्भ किया।[9] ठाकुर देशराज "जाटवीर'', ''गणेश'' के अलावा अजमेर से प्रकाशित ''राजस्थान संदेश'' नामक अखबार के सम्पादक बने। इस दौरान उन्होंने लेखक, पत्रकार और क्रांतिकारी, तीनों ही भूमिकाओं में काम किया। बाद में ''किसान'' अखबार का सम्पादन भी किया, इन सभी अखबारों ने मानों क्रांति की ज्वाला ही पैदा कर दी थी, किसान स्वयं को पहचान गये और जाग उठे। शेखावाटी के किसानों की आवाज बुलन्द करने वाली पत्रकारिता में तीसरी शख्सियत रामनारायण चौधरी थे, जिन्होंने अजमेर से ही "राजस्थान केसरी", "तरुण राजस्थान", "नवीन राजस्थान", "नया राजस्थान'' आदि अखबारों का सम्पादन किया। अन्य अखबार जिन्होंने शेखावाटी को अपनी विषय वस्तु बनाये रखा और समय–समय पर इस आन्दोलन पर प्रकाश डालते रहे, उसे सम्बल प्रदान किया वे निम्न हैं––नवयुग, बोम्बे क्रानिकल, प्रताप, वीर अर्जुन, दी स्टेटस् मैन, दी हिन्दुस्तान टाईम्स, लोकमान्य, दी फ्री प्रेस जनरल, दी नेशनल काल, दी पायोनियर, विश्वामित्र इत्यादि।

दी नेशनलकाल, लोकमान्य और वीर अर्जुन ने जहाँ राष्ट्रीय स्तर पर किसान आन्दोलन को प्रचारित किया, वहीं दी स्टेटसमैन और हिन्दुस्तान टाईम्स ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक भी शेखावाटी के किसानों और ठिकानेदारों की जंग को पहुँचा दिया। जयसिंहपुरा व खुडीकाण्डकी रिपोर्ट लन्दन तक इन्हीं अखबारों के माध्यम से पहुँची। इस प्रकार समाचार पत्रों ने इस आन्दोलन के महत्व को बहुत ऊँची नजरों से देखा और इसे यथासमय सम्बल प्रदान किया।[10]

## सारांश

इस प्रकार हम देखते हैं कि 1926 से 1934 ई० के बीच शेखावाटी के किसानों में एक जीवन पैदा हुआ था। इस जीवन को पैदा करने में जहां मण्डावा के सेठ देवीबक्स सर्राफ का प्रारम्भिक योगदान था, बाद में ठाकुर देशराज, सर छोटू राम चौधरी व अखिल भारतीय जाट महासभा के प्रतिष्ठित नेता व उसके उपदेशक यथा ठाकुर हुकमसिंह व भोलासिंह का भारी योगदान था। इन लोगों के नेतृत्व में स्थानीय जाट नेताओं ने जहां शेखावाटी के किसानों में शिक्षा प्रचार व कुरीतियाँ निवारण का कार्य किया, वहां मण्डावा आर्य समाज का जलसा, झुंझुनू में 1932 ई. का अखिल भारतीय जाट सभा का महोत्सव, गढ़वाला की ढाणी में खण्डेलावाटी जाट पंचायत का उत्सव और पलथाना की शानदार मीटिंग में लिये गये निर्णयानुसार सीकर में 10 तक जाट प्रजापति महायज्ञ का भी प्रायोजन किया था जिसमें हजारों की संख्या में लोग सम्मिलित हुए थे और किसानों ने उनमें अपनी तकलीफों पर विस्तार से विचारविमर्श किया था। ये ऐसी घटनाएँ थीं जिनमें किसानों ने सभाएँ करके तथा अपने नेताओं की हाथियों पर सवारियां निकालकर शेखावाटी के ठिकानों को खुली चुनौती दी थी। इन घटनाओं ने शेखावाटी के किसानों के हौसले बुलन्द किये थे और उनमें ठिकानों से संघर्ष करने की हिम्मत पैदा की थी। इस समय तक (1934 ई.) शेखावाटी में सीकरवाटी जाट किसान पंचायत, खण्डेलवाटी जाट पंचायत, शेखावाटी जाट किसान पंचायत आदि बन चुकी थीं और शेखावाटी के किसान इन पंचायतों के अधीन एक संगठित शक्ति के रूप में बंध चुके थे।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. डॉ. पेमाराम – शेखावाटी किसान आन्दोलन का इतिहास, मिनर्वा पब्लिकेशन, जोधपुर, 2017, पृ. 16–18
2. भूरसिंह– शेखावाटी का इतिहास (हस्तलिखित) मलसीसर झुंझुनूं, पृ. 95
3. सिंह, हरफूल – शेखावटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1987, पृ. 164.
4. ठाकुर देशराज – रियासती भातर के जाट जन सेवक, पृ. 224–225
5. शास्त्री एवं शर्मा – शेखावाटी का इतिहास, कुमार कुटीर प्रकाशन, लक्ष्मणगढ़ सीकर, 2002
6. शास्त्री एवं शर्मा – पूर्वोक्त, 2002
7. मिश्र, रतनलाल – शेखावाटी : कला और समाज, मण्डावा, झुंझुनूं, कुटीर प्रकाशन, 1998, पृ. 66.
8. राबर्ट डब्ल्यू स्टर्न – जयपुर स्टेट इन दी ब्रिटिश राज, ब्रिल प्रकाशन, 1988, पृ. 137
9. जयपुर ज्यूडिसियल रिकॉर्ड, फाइल नं. ज–2–2549, भाग 5, पेड नं. 70, रा.रा.अ., बीकानेर
10. जेम्स टॉड कृत – राजस्थान का इतिहास, केशव ठाकुर (अनु.) लोकेश शर्मा (संपा.), भागः ५, साहित्यगार, जयपुर, 2003